ओम् शान्ति 27-2-07 मधुबन

परम स्नेही परम प्यारे अव्यक्त बादादा के अति लाडले, सर्व की दुआओ के पात्र, पुण्य की पूंजी से सम्पन्न सर्व निमित्त टीचर्स बहनें तथा ब्राह्मण कुल भूषण भाई-बहनें,

मधुबन वरदान भूमि से मधुर याद स्वीकार करना जी।

बाद समाचार, हम सबके अति प्रिय सर्व के सम्माननीय, अपने शुभ-श्रेष्ठ कर्मों से सर्व के दिलों पर राज्य करने वाले, सर्व खजानों से सम्पन्न, कुमारों के विशेष मार्गदर्शक, नम्बरवन पवित्र और शीतल काया वाले पक्के योगी दादा विश्वरतन का समाचार कल आपको ईमेल द्वारा मिल गया होगा। कैसे सेकेण्ड में दादा जी हम सबको अलविदा कर प्यारे बापदादा की गोद में अव्यक्त वतनवासी बन गये।

आज मधुबन के बेहद परिवार, देश-विदेश के हजारों भाई-बहनों ने महातीर्थ मधुबन से भावभीनी श्रृद्धांजली देते पुष्प मालायें अर्पित करते विदाई दी। सारे वायुमण्डल में दादा के स्नेह, शान्ति और पवित्रता के प्रकम्पन इतने बड़े जनसमूह को एकटिक एकाग्र बनाए, गहन शान्ति और शक्ति का अनुभव करा रहे थे। दादी जानकी तथा सभी मुख्य भाई-बहनों की उपस्थिति भी वातावरण को शक्तिशाली बना रही थी। दादा के पार्थिव शरीर (अर्थी) को खूब फूल मालाओं से सजाकर मधुबन के चारों धामों की तथा आबू की परिक्रमा दिलाते, सफेद वस्त्रधारी फरिश्तों का विशाल झुण्ड लम्बी कतार में पीछे-पीछे चल रहा था। 27 तारीख 2007, करीब 11 बजे रतनमोहिनी दादी तथा मुख्य भाई-बहनों ने ओम् शान्ति के महामन्त्र के साथ मुखाग्नि देते अन्तिम विदाई दी। इसके बाद सभी अपने-अपने स्थानों से स्नान आदि करके मधुबन के मेडीटेशन हाल में पहुंचे जहाँ शशी बहन ने विशेष दादी गुल्जार जी की उपस्थिति में बाबा को भोग स्वीकार कराया तथा वतन का दिव्य सन्देश सुनाया। जो सार रूप में इस प्रकार है:

आज आप सभी की मीठी-मीठी याद लेकर जैसे मैं वतन में पहुंची, तो वतन में पहुंचते ही बाबा का बहुत स्नेही और वरदानी रूप सामने दिखाई दे रहा था। मैं संकल्प कर रही थी कि आज तो मैं खास दादा के लिए भोग लेकर आई हूँ, दादा कहाँ हैं? तो क्या देखा बाबा के लाइट रूप में कभी बाबा दिखाई दे रहा था तो कभी दादा दिख रहे थे, दादा बाबा जैसी सफेद शाल पहने हुए बहुत मुस्कराते हुए दिखाई दे रहे थे। फिर दादा ने बाबा को गले लगाया। दोनों ही लाइट रूप में समान दिखाई दे रहे थे। फिर मैंने कहा बाबा, आज दादा को सभी याद कर रहे हैं। तो बाबा ने कहा दादा को बोलो। तो दादा बोले, मैं तो अभी बाबा के पास आ गया। इतने में बाबा ने एक बहुत सुन्दर सर्कल दिखाया और कहा बच्ची इस सर्कल को देखो और यह बटन दबाओ। तो बटन दबाते ही सर्कल घूमने लगा, तो लाइट में विभिन्न प्रकार की कलाकर्तियां निकलने लगी। उसमें बहुत सुन्दर मालायें तथा अन्य चीजें भी थीं जो दादा के पास इकट्ठी हो रही थीं और अनेक मालायें दादा के गले में पिरोती जाती थी। तो मैंने कहा दादा का तो बहुत अच्छा श्रृंगार हो गया। दादा के पास तो यह सब बहुत सी चीजें आई हैं! ये सब क्या हैं? तो बाबा ने कहा यह सब दादा की हैं। तो दादा बोले, मेरा तो कुछ नहीं है। तो बाबा ने कहा इस बच्चे ने शुरू से लेकर हर गुण को, हर शक्ति को, अपने जीवन से प्रैक्टिकल में एक्जाम्पल बनके दिखाया है। शुरू से लेकर हाँ जी करते हुए हरेक गुण को कला के रूप में परिवर्तित किया है। आज ये 16 कलायें भक्त बनके दादा का स्वागत और सम्मान कर रही हैं। बाबा ने कहा बच्चे इन्हें ध्यान से देखो तो दादा बोले, बाबा ये सब आपका है, आपने ही दिया है। फिर यह दृश्य पूरा हो गया।

फिर बाबा, दादा को लेकर आगे चले, तो सामने बहुत से भाई-बहनें दिखाई दे रहे थे, उन सबके हाथ में अनेक सुन्दर सी मालायें थी। तो दादा ने पूछा - बाबा ये सब कौन हैं? बाबा ने कहा ये सब आपसे बहुत स्नेह रखते हैं, आपने हरेक के ऊपर अपनी श्रेष्ठ धारणाओं की अमिट छाप छोड़ी है,

इसलिए ये सब आपके सामने आये हैं। बाबा ने कहा देखो बच्चे तुमने बहुत बड़ी एक ऐसी सेना तैयार कर दी है जो अपने गुणों के आधार से यज्ञ को और आगे बढ़ा रहे हैं। यही बच्चे अनेक गुणों से स्वयं को सम्पन्न बनाकर आगे चलकर औरों के सामने बापदादा को प्रत्यक्ष करेंगे।

फिर मैंने कहा दादा आप अचानक वतन में चले आये, किसी से मिले नहीं। तो कहा कि मैं तो सबसे मिलकर आया हूँ। फिर पूछा दादी जी कहाँ हैं? तो बाबा ने सब दादियों को इमर्ज किया। दादियों के बीच सर्कल में दादा खड़े थे, सभी दादियाँ बहुत स्नेह दे रही थी। बाबा ने कहा देखो बच्चे आपने अथक बन, हाँ जी के पाठ से सबके दिलों को जीता है तो सभी आपको कितना स्नेह दे रहे हैं।

मैंने कहा कि मधुबन से आपके लिए सबकी याद के साथ ब्रह्मा भोजन लाई हूँ। तो बाबा ने अपने हाथ से दादा को भोग स्वीकार कराया। फिर दादा बोले, मेरी सबको बहुत-बहुत याद देना। खास दादियों को याद दी और कहा कि दादियों ने मुझे हर कदम में बहुत सहयोग दिया है। हर समय आगे बढ़ाती रही हैं। मैंने दादियों से बहुत कुछ सीखा है। मैं तो यज्ञ सेवक हूँ। बाबा को मेरे से कोई भी सेवा करानी हो तो मैं हमेशा तैयार हूँ। बाबा ने जो कार्य दिया है, मैं करता ही रहूँगा। फिर मैंने कहा आपके डिपार्टमेन्ट के सभी भाई-बहनों ने याद दिया है? तो बोला डिपार्टमेन्ट वाले भी तो अथक सेवाधारी हैं। ये भी सब बहुत अच्छा काम करते हैं, एकाउन्ट लिखते रहते हैं लेकिन अभी अपने पुण्य का एकाउन्ट भी लिखें। पुण्य जमा करते जायें। साथियों को मेरी बहुत याद देना, सबने मुझे बहुत प्यार दिया है।

फिर बाबा ने कहा बच्चे ने शुरु से लेकर यज्ञ में अथक सेवायें बहुत ऑनेस्टी से की हैं, किसी भी प्रकार की कमी नहीं आने दी। सदा हाँ जी करते दधीचि ऋषि समान कार्य किया है। बाबा दादा के गुणगान कर रहे थे। बाबा ने कहा भविष्य में जाकर और भी कई महान कार्य इसको करने हैं। मैंने कहा बाबा मधुबन में दादा को सब मिस करेंगे। तो बाबा ने कहा मिस नहीं करना, लेकिन दादा ने जो प्रैक्टिकल में करके दिखाया है, उसको अपने अन्दर लाते जाना। तो बाबा के साथ दादा भी साथ में है और सबके सामने एक उदाहरण भी है। फिर मैंने दादा को और बाबा को आप सबकी याद दी और वापस आ गयी।

इसके बाद दादी गुल्जार ने दादा जी की विशेषतायें सुनाते कहा कि दादा तो सन्तुष्टता की मूर्ति थे। सदा सन्तुष्ट रहे और सबको सन्तुष्ट किया इसलिए इतने सबकी दुआयें दादा को मिली। पुण्य की कमाई जमा की और सबके लिए उदाहरण मूर्त बनें। सेकेण्ड में एवररेडी रहने का पाठ पढ़ाया।

इस प्रकार आज का यह दृश्य ड्रामा की रील में कल्प पहले मिसल लिपट गया।

विशेष नोट:-

दादा विश्व रतन जी पूरे विश्व के तथा अपने ब्राह्मण परिवार के अनमोल रत्न थे। पूरे ब्राह्मण परिवार का आपसे विशेष स्नेह था। ऐसी स्नेही आदि रत्न, महान आत्मा प्रति सतगुरुवार 1 मार्च को विशेष बड़ा भोग सभी सेवा स्थानों पर लगाया जाये। भोग ही ऐसा हो जैसे ब्रह्मा भोजन। जिसमें सहज हो तो बूंदी या हलुआ, पूरी, चना, पुलाव आदि का भोग सभी को मिले। मधुबन में भी 1 मार्च को विशेष भोग वा ब्रह्माभोजन रखा गया है। कृपया यह सूचना आप अपने सम्बन्धित सेवाकेन्द्र/उपसेवाकेन्द्रों को भी अवश्य भिजवा दें। अच्छा - सभी को बहुत-बहुत याद।

ईश्वरीय सेवा में,
बी.के. राजू/ दादी गुल्जार की तरफ से